जब हुआ देश आजाद सन् 1947 में
था वातावरण उल्लास का
उत्साह का, उमंग का
शिष्टता का, सदाचार का, संवेदनशीलता का
गौरव का, गंभीरता का, गतिशीलता का।

थे नेता आदर्श, कर्मठ
देशभक्त, चरित्रवान
त्यागी, बलिदानी
समर्पित, सादगीपूर्ण
बनाया संविधान

खड़ी की मूलभूत संस्थाएं
प्रारंभ की पंचवर्षीय योजनाएं
लिया संकल्प शिक्षा फैलाने का
गरीबी मिटाने का
अंधविश्वास हटाने का
विश्वसनीयता स्थापित करने का
देश को शक्तिशाली बनाने का।

ऐसे प्रेरणादायी वातावरण में
देश के संवेदनशील युवा
युवतियों में जगी भावना
देश निर्माण में जुड़ने की
अपने-अपने अनुभव
और समझ से कुछ करने की।
इसी भावना के अनुरूप
मेरे युवा मन को भी मिला बोध
अज्ञान स्रोत से मिली प्रेरणा।

अपने वैतनिक कार्य के साथ
स्वैच्छिक सेवा कार्य करने की
जो हो देश निर्माण की धारा में
हुआ चिंतन मनन परिवार में
मिला आशीष पूज्य पिताजी और मां का
मिला आश्वासन धर्मपत्नी से सहयोग का
बना विचार कार्य पैतृक गांव से करने का
मिला आशीर्वाद और सहयोग गाँव का
और ठाकुर केप्टन दौलतसिंह का
आवश्यकता थी शुभदृष्टि और सहमति
मेरे बॉस प्लांट पैथोलोजिस्ट डॉ. एन. प्रसाद की
बढ़ाया खूब उत्साह उन्होंने और दिया संबल
लिया सुझाव मेरे मित्र डॉ. के.बी. शर्मा का।

निश्चित हुआ संस्था बनाना
निश्चित हुआ 'विज्ञान समिति' नाम
हुआ उद्घाटन डॉ. एन.प्रसाद द्वारा
केलवा रावले में ठाकुर सा. की अध्यक्षता में
दिन था 28 अगस्त 1959
उपस्थित थे पी.एम.ओ. उदयपुर क्षेत्र के
सहयोगी थे मेरे सारे साथी विभाग के
उपस्थित थे मेरे मित्र डॉ. कन्हैयालाल शर्मा
सहभागी बने मेरा परिवार, ग्रामवासी और सरपंच

किया स्थापित केलवा रावले में
एक विज्ञान केन्द्र जो बना
आकर्षण और ज्ञान अर्जन का
दिया चंदा एक-एक रुपये का गांववासियों ने
और दिया आर्थिक सहयोग विकास अधिकारी
राजसमन्द शक्तावत श्री देवेन्द्र जी ने
यह संक्षिप्त व्यथा-कथा है
विज्ञान समिति के जन्म की
स्वर्ण जयन्ती समारोह पर मिले
शुभकामनाएं आप सब की

—डॉ. के.एल. कोठारी